Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ऋषभदेव की वर्तमान जनांकिकी एवं आधुनिकता का परिप्रेक्ष्य

डॉ. विनिता श्रीमाली* हिमांशु जैन**

* सहायक आचार्य (इतिहास) माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

** शोधार्थी (इतिहास) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड) विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – प्रस्तुत शोध पत्र ऋषभदेव पंचायत समिति क्षेत्र की जनांकिकी और आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य के तथ्यों पर आधारित है। धार्मिक दृष्टिकोण से ऋषभदेव पर कई अध्ययन हो चुके है। उपलब्ध अध्ययनों के कई नवीन संस्करण भी उपलब्ध है। स्वतंत्रता के पश्चात् अलग-अलग दशकों में इस क्षेत्र का विकास होता रहा लेकिन उदयपुर जिले के खेरवाड़ा तहसील की छाया में जनांकिकीय और उपलब्ध संसाधनों के तथ्यों को स्पष्ट किया जा ना सका।

प्रशासनिक अस्तित्व – सन् 2001 की जनगणना के बाद उदयपुर जिले में ऋषभदेव और लसाड़िया नाम से दो नई तहसीलें बनाई गई हैं। ऋषभदेव तहसील का गठन 03 अप्रेल 2008 को खेरवाड़ा के 79 गांवों और सराड़ा तहसीलों के 19 गांवों को शामिल करके किया गया है, जबकि लसाड़िया तहसीलों में सलूंबर के 19 गांवों और धारियावद तहसीलों के 88 गांवों को 25 जनवरी 2008 को शामिल किया गया है।

ऋषभदेव पंचायत समिति – ऋषभदेव पंचायत समिति में 25 ग्राम पंचायतें है और गांवों की संख्या 100 है तथा कुल क्षेत्रफल 47940 हेक्टेयर है जिसमें से कुल कृषि भूमि 2872 हेक्टेयर है। कुल जनसंख्या 172935 है और 63.6 प्रतिशत साक्षरता है। पुरुष जनसंख्या 88216 तथा 78.75 प्रतिशत है और महिला जनसंख्या 84719 तथा 47.97 प्रतिशत है।

ऋषभदेव तहसील – जनगणना 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या में से 5.3 प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में रहते हैं जबकि 94.7प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। शहरी क्षेत्रों में औसत साक्षरता दर 85.6प्रतिशत है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में 62.3प्रतिशत है। साथ ही ऋषभदेव तहसील में शहरी क्षेत्रों का लिंग अनुपात 923 है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों का 962 है।

तालिका : 01

विवरण	कुल	पुरूष	महिलाएँ
बच्चे (आयु 0-6)	32,371	16,788	15,583
साक्षरता	63.62%	63.77%	39.15%
अनुसूचित जाति	5,039	2,622	2,417
अनुसूचित जनजाति	1,45,576	73,977	71,599
अशिक्षित	83,515	31,962	51,553

ऋषभदेव तहसील में 0-6 वर्ष की आयु के बच्चों की जनसंख्या 32371 है जो कुल जनसंख्या का 19प्रतिशत है। 0-6 वर्ष की आयु के बीच 16788 लड़के और 15583 लड़कियाँ हैं। इस प्रकार जनगणना 2011 के अनुसार ऋषभदेव तहसील का बाल लिंग अनुपात 928 है जो ऋषभदेव तहसील के औसत लिंग अनुपात (960) से कम है। ऋषभदेव तहसील में अनुसूचित जाति (एससी) की जनसंख्या 2.9 प्रतिशत है जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) की जनसंख्या 84.2 प्रतिशत है।

तालिका : 02

धर्म	कुल	पुरूष	महिलाएँ
हिंदू	1,68,969	86,162	82,807
मुस्लिम	108	56	52
ईसाई	493	262	231
सिख	24	15	9
बौद्ध	2	2	0
जैन	2,946	1,525	1,421
अन्य धर्म	3	3	0
कोई धर्म निर्दिष्ट नहीं	390	191	199

कस्बे के लगभग तीन-चौथाई निवासी हिंदू हैं, जो ब्राह्मण, सुथार, लोहार, दर्जी, मोची, कुम्हार, सोमुपुरा, वाल्मीकि और अन्य जातियों से संबंधित हैं और एक-चौथाई (95 प्रतिशत दिगंबर जैन) कई सालों से यहाँ रह रहे हैं। श्वेतांबर जैन भी यहाँ रहते हैं। ऋषभदेव के आस-पास कई भीलों के गाँव हैं, और वे प्रतिदिन प्रार्थना के लिए ऋषभदेव आते हैं, जो बीसपंथी नरसिंहपुरा और हुमड़ समुदायों से संबंधित संप्रदायों में हैं। जैन समाज के अलावा आदिवासी समाज के लोगों का भी इस मंदिर के प्रति अटूट आस्था है। ऋषभदेव विष्णु के आठवें अवतार के रूप में भी माने जाते हैं। यही कारण है कि आदिवासी समाज के लोग भी इनकी आराधना करते हैं। यह मेवाड़ के प्रमुख चार धामों में से एक है। वहीं, मंदिर में भगवान की काले रंग की प्रतिमा स्थापित है। जिसे आदिवासी भील, मीणा समुदाय के लोग कालिया बाबा कहते हैं।

कार्यशील जनसंख्या – ऋषभदेव तहसील की कुल जनसंख्या में से 73,042 लोग कार्य गतिविधियों में लगे हुए थे। 33.5 प्रतिशत श्रमिक अपने काम को मुख्य कार्य (6 महीने से अधिक रोजगार या कमाई) बताते हैं, जबकि 66.5 प्रतिशत 6 महीने से कम समय के लिए आजीविका प्रदान करने वाली सीमांत गतिविधि में शामिल थे। मुख्य कार्य में लगे 73,042 श्रमिकों में से 10,507 किसान (मालिक या सह-मालिक) थे जबकि 1,763 कृषि मजदूर थे।

शैक्षणिक संस्थान – ऋषभदेव के शैक्षणिक संस्थानों में 144 प्राथमिक विद्यालय है और 95 माध्यमिक विद्यालय है और 24 उच्च माध्यमिक विद्यालय है तथा 1 सरकारी महाविद्यालय है। इसके अलावा महावीर पब्लिक स्कूल, विवेकानंद केंद्र विद्यालय, ईडन इंटरनेशनल स्कूल, विद्या निकेतन, क्लासिक पब्लिक स्कूल, जेआर शर्मा महाविद्यालय भी अपनी सेवाएं दे रहे है।

अर्थव्यवस्था – इस क्षेत्र में 200 से ज़्यादा ग्रीन मार्बल की खदानें हैं। ऋषभदेव ग्रीन मार्बल का सबसे बड़ा खननकर्ता है। दुनिया का 90 प्रतिशत ग्रीन मार्बल ऋषभदेव में ही बनता है। मार्बल उद्योग का टर्नओवर 500 करोड़ से ज्यादा है। यह कई मज़दूरों को रोज़गार भी देता है। इसके अलावा शहर में एलएनजे भीलवाड़ा समूह की कताई और बुनाई मिल भी है। इस तरह से 10000 स्थानीय मज़दूरों को रोज़गार मिलता है। मंदिर की मौजूदगी से कई लोगों की आय भी होती है। मंदिर के पास कई दुकानें हैं जहाँ पूजा सामग्री बेची जाती है।

बैंकिंग संस्थान – ऋषभदेव में बैंक ऑफ बड़ौदा, इलाहाबाद बैंक, भारतीय स्टेट बैंक ऋषभदेव, कोटक महिंद्रा बैंक, उदयपुर सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक ऋषभदेव, आईसीआईसीआई बैंक अपनी सेवाएं दे रहे है।

बस परिवहन – राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम राजस्थान राज्य में एक सरकारी स्वामित्व वाली परिवहन सेवा है। सड़क परिवहन अधिनियम, 1950 के तहत 1964 में स्थापित है। इसका मुख्यालय राज्य की राजधानी जयपुर में स्थित है। केसरियाजी से उदयपुर के बीच 13 से अधिक बसें संचालित करती है। उदयपुर की सड़क मार्ग से दूरी लगभग 57 किमी है। निगम सभी प्रमुख कस्बों और गांवों के लिए बसें चलाता है। केसरियाजी से उदयपुर मार्ग राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम द्वारा संचालित प्रमुख बस मार्गों में से एक है। यात्री केसरियाजी से उदयपुर तक यात्रा करने के लिए एक साधारण बस, डीलक्स, एक्सप्रेस या सेमी-स्लीपर विकल्प के साथ अल्ट्रा लग्जरी बस चुन सकते हैं।

रिखबदेव रोड रेलवे स्टेशन – रिखबदेव रोड रेलवे स्टेशन से सभी प्रमुख भारतीय शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। रिखबदेव रोड से 5 साप्ताहिक ट्रेनें चलती हैं। रिखबदेव रोड रेलवे स्टेशन पर 5 ट्रेनें गुजरती हैं और कोई ट्रेन खत्म नहीं होती। रिखबदेव रोड से चलने वाली/गुजरने वाली पहली ट्रेन 06:30 बजे रवाना होती है।

स्थानीय आकर्षण – आसपास के दर्शनीय स्थलों में गुरुकुल जैन मंदिर, कांच का मंदिर, पगल्याजी, महावीर जिनालय, ऋषभ गार्डन, पाठशाला जैन मंदिर, राम मंदिर, ईमलियाचौड़ हनुमान जी, चंद्रगिरी, भीम पगल्या, भट्टारक कीर्ति भवन, विश्वकर्माजी मंदिर, सत्यनारायण मंदिर, सूरज कुंड गणेश मंदिर, रायाणा हनुमान जी, दादाबाड़ी और वघुवन।

जल घड़ी – प्राचीनकाल में भारतीयों ने पूरे दिन को आठ भागों में विभक्त किया था। जिसे घड़ी की संज्ञा दी गई। ठीक इसी प्रकार आगे चलकर इसे चार भागों में बांटा गया, जिसे प्रहर कहा जाता है। इसी के आधार पर यहां जल घड़ी का निर्माण किया गया, जिसके अनुसार ही यहां पूजा की जाती है। उन्होंने बताया कि यह घड़ी एक लकड़ी के बक्से में तांबे के बड़े से भगौने में पानी भर कर रखा जाता है। जिसके अंदर पानी भरा जाता है। साथ ही इसके भीतर एक तांबे का कटोरा होता है। जिसमें एक छिद्र होता है, जो 24 मिनट में पारी से भर जाता है। जैसे ही यह कटोरा भरता है वैसे ही मंदिर का गार्ड घंटी बजाता है और समय का संकेत देता है। खास बात यह है कि यहां पिछले 1500 सालों से इस घड़ी के आधार पर पूजा की जाती है।

उपसंहार – ऋषभदेव में समय के साथ-साथ आधुनिकता का प्रवेश होता गया है। वर्तमान में उत्तर आधुनिकता के पहलु भी समाहित हो रहे है। यहाँ का मुख्य आकर्षण ऋषभदेव जैन मदिर है। ऋषभदेव पंचायत समिति, तहसील और अन्य कार्यालयों से जुड़े तथ्यों का द्वितयीक स्तर पर उपलब्धता बहुत कम है। अत: उपलब्ध तथ्यों के आधार पर ही उक्त शोध पत्र लिखित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Emerging Trends in Indian Tourism and Hospitality: Transformation and Innovation. (2019). India: Copal Publishing Group.
2. Directorate of Census Operations. (2011). Udaipur District 2011 Census Handbook Part B.

****